ISSN:2395-1079 Available online at http://www.gjms.co.in/index.php/sajms

South Asia Journal of Multidisciplinary Studies SAJMS June 2017, Vol. 3, No 5

UGC 49956-907

प्राचीन ऐतिहासिक स्थल–आगरा

ज्योति कौशल
स्कूल ऑफ प्राचीन भारतीय इतिहास संस्कृति एवं पुरातत्व
डॉ हरिसिंह गौर विश्वविद्यालय–सागर (म.प्र.)

सारांश आगरा केवल मुगल और अंग्रेजी शासनकाल में ही महत्वपूर्ण नहीं रहा बल्कि यह प्राचीन काल से ही ऐतिहासिक स्थल रहा ह। महाभारत काल में भी आगरा से पाण्डवों के संबंधित रहने के प्रमाण मिलते है। आगरा में पिनाहट को पाण्डव काल से संबंधित माना जाता है। जनपद मे स्थित बाणगंगा या उटंगन नदी के विषय में कहा जाता है। कि अर्जुन के बाण से इसकी उत्पत्ति हुई है।
आगरा का रूनकता परशुराम की मॉ रेणुका से संबंधित था। आगरा में स्थित बटेश्वर तथा सूर्यपुर गॉव प्राचीन है। बटेश्वर के पास सूर्यपुर सौरीपुर जैन धर्म का प्रमुख केन्द्र था। आजकल बटेश्वर तथा सौरीपुर पर्यटन स्थल के रूप मे जाने जाते है। उत्तरप्रदेश के जनपदो में आगरा जनपद एक ऐतिहासिक जनपद है। राजस्थान की सीमा पर स्थित होने के कारण इसका विशेष महत्व है। मुस्लिम एवं आंग्ल शासनकाल मे इसके भौगोलिक महत्व ने इसकी अभिवृद्धि मे बहुत ही सहयोग दिया है। अंग्रेजी शासनकाल मे 1858 तक आगरा उत्तर पश्चिमी प्रान्त की राजधानी रहा। वास्तव मे देखा जाए तो आगरा पर्यटन स्थल मुगल स्थापत्य के कारण बना।

शब्दकोश :जनपद ऐतिहासिक सील भौगोलिक महत्व

प्रस्तावना

उत्तरप्रदेश के जनपदो मे आगरा जनपद एक ऐतिहासिक जनपद है। राजस्थान की सीमा पर स्थित होने के कारण इसका विशेष महत्व है। मुस्लिम एवं आंग्ल शासनकाल मे इसके भौगोलिक महत्व ने इसकी अभिवृद्धि मे बहुत ही सहयोग दिया है। अंग्रेजी शासनकाल मे 1858 तक आगरा उत्तर पश्चिमी प्रान्त की राजधानी रहा। वास्तव मे देखा जाए तो आगरा पर्यटन स्थल मुगल स्थापत्य के कारण बना।

आगरा केवल मुगल और अंग्रेजी शासनकाल म ही महत्वपूर्ण नहीं रहा बल्कि यह प्राचीन काल से ही ऐतिहासिक स्थल रहा है। महाभारत काल में भी आगरा से पाण्डवों के संबंधित रहने के प्रमाण मिलते है। आगरा म पिनाहट को पाण्डव काल से संबंधित माना जाता है। जनपद मे स्थित बाणगंगा या उटंगन नदी के विषय मे कहा जाता है। कि अर्जुन के बाण से इसकी उत्पत्ति हुई है।
आगरा का रूनकता परशुराम की मॉ रेणुका से संबंधित था। आगरा म स्थित बटेश्वर तथा सूर्यपुर गॉव प्राचीन है। बटेश्वर के पास सूर्यपुर सौरीपुर जैन धर्म का प्रमुख केन्द्र था। आजकल बटेश्वर तथा सौरीपुर पर्यटन स्थल के रूप मे जाने जाते है।

पुरातत्व की दृष्टि से आगरा नगर से दक्षिण पश्चिम की दिशा म जगनेर रोड पर स्थित कागारौल भी आगरा जनपद का प्राचीन नगर है। यह टीले पर स्थित है। एवं यहॉ प्राचीन दुर्ग के अवशेष है। कागारौल के विषय मे कहा गया है। कि खगर राजा और उनके पुत्र रोल के नाम यह कागारौल के नाम से सम्बोधित होने लगा था। [1]

आगरा के प्रमुख ऐतिहासिक स्थल

आगरा का लाल किला– आगरा का लाल किला अकबर की स्थापत्य कला का सबसे सुंदर नमूना है। इसका निर्माण अकबर के प्रधान कारीगर की देखरेख मे किया गया था। इसके निर्माण मे 15 वर्ष लगे थे। और 35 लाख रूपये खर्च हुआ था। यह किला यमुना के दाहिने किनारे पर बना है। और डेढ मील के घेरे मे स्थित है। इसकी दीवार 70 फुट उंची है। इसके दो दरवाजे है। जो दरवाजा पश्चिम मे स्थित है। उसको दिल्ली दरवाजा कहते है। दूसरा दरवाजा जो दक्षिण की ओर हो जिसे अमर सिंह दरवाजा कहा जाता है। इसके भीतर अकबर ने लाल पत्थर की लगभग 500 इमारते बनवायी जिनमे अकबर महल और जहॉगीर महल प्रसिद्ध है।

आगरा के किले के विषय मे कहा जाता है। कि इसकी दीवारे कभी नही बनायी गयी थी। क्योंकि उपर से नीचे तक आग जैसे लाल गढ़े हुये पत्थरो को इतनी बारीकी से जोड़ा गया है। कि उनके जोड़ म एक बाल भी नहीं जा सकता।

दिल्ली दरवाजा बहुत ही मजबूत है। इस दरवाजे के दोनो ओर पत्थर के दो हाथी महावत सहित बने हुये थें। औरंगजेब ने इन हाथिया को तोड़ डाला था।

ISSN:2395-1079 Available online at http://www.gjms.co.in/index.php/sajms
South Asia Journal of Multidisciplinary Studies SAJMS June 2017, Vol. 3, No 5
UGC 49956-907

संदर्भ–1 यूनीफाइड इतिहास. डॉ सत्यनारायण दुबे पृष्ठ संख्या–310

पर्सी ब्राउन के अनुसार दिल्ली दरवाजा भारत के सबसे प्रभावशाली दरवाजा म से है, इसके मुख्य प्रवेश द्वार पर दो दुर्ग है। किंतु जिस कुशलता से यह साधारण सी योजना कार्यान्वित को गयी है। वही इसे इतना प्रभावशाली और साथ ही कलात्मक रूप दे देती है। दूसरा दरवाजा साधारण है। जो अमर सिंह दरवाजा कहलाता है।

2.जहांगीरी महल. जहांगीरी महल आगरा के किले के अंदर बना हुआ है। जहांगीर महल वर्गाकार बना है।इसकी लम्बाई 249 फुट और चौड़ाई 260 फुट है। इसकी चारा कोना पर चार बड़ी छतरियॉ है। महल का प्रवेश द्वारा नोंकदार मेहराव का है। इसमे सफेद संगमरमर की जुड़ाईदार डिजाइने बनाकर सजावट लाई गई है। इस महल के बीच मे आयताकार ऑगन है। जिसके चारा ओर दो मंजिले कमरो की पंक्तिया है। बीच का ऑगन 71 फुट और 72 फुट का है।

इस महल का डिजाइन और रचना लगभग पूर्णरूप से हिन्दू है। इसमे तीरा आर ब्रेकेटो पर आधारित शैली को अपनाया गया है। इसकी छत डाटदार न होकर पटी हुई है। इसमे मेहराव केवल सजावट के लिए बने हुये है। इसकी मुख्य विशेषता पत्थर के शहतीरो को संभालने वाले गढ हुये सुन्दर खुदाई के काम के ब्रेकेट चौड़े–चौड़े छज्जे तथा पटी हुई छते है। जो इसके सभी भागो मे है। इस महल की कारीगरी का उद्देश्य लकड़ी की कारीगरी जैसा प्रभाव उत्पन्न करना था।

जहांगीर महल के संदर्भ मे यह कहना सही है। कि इस महल की रचना शैली इतनी हिंदू है। कि अगर उसे ग्वालियर चित्तौड़ या उदयपुर की किन्ही भी इमारता के बीच रख दिया जाये तो वह उनसे अलग नही लगेगा।

ताजमहल.

ताजमहल विश्व की सबसे सुंदर तथा कला का उच्चकोटि का नमूना है। इसका निर्माण शाहजहां ने अपनी बेगम मुमताज महल की यादगार मे कराया था। इसमे मुमताज की यादगार मे कराया था।इसमें मुमताज महल के अस्थि अवशेष प्रतिस्थित है। इसका निर्माण आगरा नगर के दक्षिण मे यमुना के किनारे पर राजा जयसिंह के बगीचे मे किया गया था।

कुछ यूरोपीय इतिहासकारो का मत है कि ताजमहल की योजना जिरोनिमो बैरीनियो नामक एक बेनेशियन कलाकार ने तैयार की थी। किंतु भारतीय विद्धान इस मत से सहमत नही है। उनका मत है। कि ताजमहल के निर्माण मे किसी भी यूरोपीय का कोई भी हाथ नही है। इसका प्रमाण यह है। ताजमहल पूर्णतः भारतीय शली मे बनाया गया है। इस पर पश्चिमी कला का कोई प्रभाव नही है।[1]

वास्तविकता यह है कि उस्ताद अहमद लाहौरी ने तैयार किया था। [2]

वह शाहजहा का प्रधान कारीगर था ताजमहल के निर्माण मे 22 वर्ष लगे थे और उसमे 50 लाख रूपये खर्च हुये थे। [3]

पूरा ताजमहल सफेद संगमरमर के पत्थरा का बना हुआ है।2 ताजमहल के उंचे उंचे दरवाजा के किनारो पर कुरान की आयत खुदी हुई है। उन्हे देखने से प्रकट होता है। कि कलाकारो का नेत्रदशा पर पूर्ण अधिकार था। ताजमहल कलाप्रेमियो का मक्का माना जाता है। ताजमहल एक इमारत ही नही बल्कि संगमरमर के रूप मे एक काव्य है। विश्व के सभी भागो के पर्यटक इसे देखने आते है। शरद पूर्णिमा की रात्रि को यहॉ मेला लगता है।

चन्द्रमा की रोशनी मे ताजमहल के अनुपम सौंदर्य को देखकर लोग रोमांचित हो उठते है।

एक इतिहासकार का कथन है। यदि संपूर्ण ऐतिहासिक साहित्य नष्ट हो गया होता और केवल ताजमहल शाहजंहा के शासन की कथा सुनाने को बच रहता है। तो इसमे संदेह नही कि उसे विश्व इतिहास का सबसे अधिक वैभव संपन्न युग कहा गया होता।

1. इंडियन आर्किटेचर– द्वितीय संस्करण पृष्ठ 17–40
2. बंगलौर के सैयद महमूद के पास उपलब्ध हाफिज–लुतफुल्ला मंहदी के दीवान ए मंहदी नामक लेख के आधार पर।
3. डॉ आर्शीवादी लाल के अनुसार।

दीवान ए आम.

दीवान ए आम का निर्माण शाहजंहा ने 1628 ई. म आगरा के किले मे करवाया था। इसमे दोहरे खंभो की 40 कतारे है। यह हॉल तीनो ओर से खुला है इसकी लंबाई 201 फुट और चौड़ाई 68 फुट है। इसके खंभे सुन्दर संगमरमर के बने हुये हैं। हॉल के बीच म एक लंबी गैलरी है। इसमे सम्राट सिंहासन पर बैठता है। इसके नीचे हाल मे एक ऊँचा मंच था जिसमे बजीर बैठता था। इसमे सम्राट का दरबार लगता था।

दीवान ए खास.

दोवान ए खास आगरा के किले म बना है। यह सफेद संगमरमर की आयताकार इमारत है। इसमें स्थापत्य कला के सुंदर नमूने है। इसम खुदाई, जुड़ाई, तथा नक्काशी का कार्य बहुत ही सुंदर ढंग से किया गया है दीवाने ए खास के सामने 41 गज लंबा और 29 गज चौड़ा खुला सहन है। इसमे पश्चिमी

ISSN:2395-1079 Available online at http://www.gjms.co.in/index.php/sajms
South Asia Journal of Multidisciplinary Studies SAJMS June 2017, Vol. 3, No 5
UGC 49956-907

किनारे पर एक संगमरमर का चबूतरा है। जिस पर सांयकाल शाहजंहा बैठा करता था। दीवान ए खास मे शाहजंहा विशेष दरबार करता था। जिसमे केवल सर्वोच्च अधिकारी और अमीर बुलाये जाते थे।

शीश महल.

दीवाने ए खास के नीचे शीश महल स्थित है। इसकी दीवारो और दरबाजा पर शीशे जड़े हुये है। और उन पर सुनहरी और अन्य रंगो का काम है। इस कक्ष मे दो हौज है। जिसमे पानी भर दिया जाता था जो स्नान करने के काम आता था।

फतेहपुर सीकरी की इमारतें .

फतेहपुर सीकरी के नगर का निर्माण अकबर ने कराया था। अकबर ने कराया था। अकबर के कोई पुत्र नही था। सीकरी के शेख सलीम के आशीवाद से अकबर को पुत्र रत्न प्राप्त हुआ। जिसका नाम उसने सलीम रखा जो आगे जहांगीर के नाम से प्रसिद्ध हुआ। अकबर ने इस स्थान को पवित्र और अपने सौभाग्य का समझकर लगभग 15 वर्षो मे एक नगर बसा दिया अनेक भव्य भवनो का निर्माण कराया।

जहांगीर ने अपनी आत्मकथा मे लिखा है मेरे पिता ने जो सीकरी गॉव को जो कि मेरा जन्मस्थान था। अपने लिए सौभाग्यपूर्ण समझकर उसे अपनी राजधानी बना लिया चौदह पन्द्रह वर्षो मे यह जंगली जानवरा से घिरी हुई पहाड़ी सभी प्रकार के बाग बगीचो इमारता और ऊँची शानदार अटटालिकाओ तथा हदय को प्रिय लगने वाले महलो से युक्त नगरी बन गई।

शेख सलीम चिश्ती का मकबरा सफेद संगमरमर का बना हुआ है और यह फतेहपुर सीकरी की इमारतो मे सबसे सुंदर है।

फतेहपुर सीकरी की इमारते मुगल स्थापत्य कला के सर्वश्रेष्ठ नमूने है। ये इमारत अधिकांश लाल पत्थर बनी हुई है। ये इमारते अधिकांश लाल पत्थर की बनी हुई है। केवल सजावट के लिए कहीं कहीं सफेद संगमरमर का प्रयोग किया गया हे। यहॉ कि इमारते अकबर की सुलहकुल की नीति का साक्षात रूप है। इतिहासकार वी. ए. स्मिथ ने लिखा है फतेहपुर सीकरी जैसा निर्माण कार्य न कभी हुआ था। और न कभी होगा। यह रोमांस का पाषाण प्रतिरूप है।

फतेहपुर सीकरी की महान इमारतें ताजमहल के पश्चात मुगल युग की सर्वश्रेष्ठ कलाकृतियॉ है। इन इमारतो मे महल, सभाग्रह, कार्यालय सरकारी विधालय, अस्पताल जामामस्जिद सभी सम्मिलित है। स्नानागर और जलव्यवस्था यात्रियो को सभागृह बड़ी–2 सरायें और जामामस्जिद सभी सम्मिलित है।

सिकन्दरा का अकबर का मकबरा.

जहांगीर के समय की दूसरी उल्लेखनीय इमारत अकबर का मकबरा है। इसका नक्शा अकबर ने स्वयं बनवाया किंतु यह तैयार 1605 तथा 1613 ई. के बीच जहांगीर की देखरेख मे हुआ था। इस मकबरे के पॉच चौकोर दो चबूतरे है। जो प्रत्येक मंजिल मे छोटे होते गये है। इस मकबरे के उपर कोई गुम्बद नही है। मुसलमानो के सभी मकबरे के उपर कोई गुम्बद बनाने की प्रथा प्राचीन समय से चली आयी है। यह बौद्ध बिहारो की तरह बनी हुई है। यह मकबरा 320 फुट मे बना हुआ है। तथा 100 फुट ऊँचा है। इसमे प्रथम मंजिल पर अकबर की असली कब्र है।

जामा मस्जिद.

यह मस्जिद आगरा फोर्ट स्टेशन के सामने स्थित है। इसका निर्माण शाहजंहा की पुत्री जहांआरा बगम ने कराया था। इसकी मुख्य इमारत 103 फीट लंबी और 100 फीट चौड़ी है। इसका निर्माण 1648 ई. म जन साधारण के उपयोग के लिए किया गया था। इसके निर्माण पर 5 लाख रूपये व्यय हुये थे।

निष्कर्ष

आगरा इतिहास के तीनो काल खंडो प्राचीनकाल,मध्यकाल आधुनिककाल म इतिहास की दृष्टि से महत्वपूर्ण स्थान रखता है। यहॉ पर विश्व प्रसिद्ध पर्यटन स्थल है। आगरा में अन्य ऐतिहासिक महत्व के स्थल है। राजा महाराजा स्वतंत्रता सेनानियो,क्रांतिकारियो का आगरा प्रमुख केन्द्र रहा है। यहॉ पर प्रतिवर्ष लाखो पर्यटक देश तथा विदेश से आते है। जिनके कारण आगरा का व्यवसाय बढा है। तथा रोजगार की वृद्धि हुई।